शोध मंथन Vol. XI No.I Jan.-Mar. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

प्रसाद के काव्य में सार्वभौमिक भावना और विश्व–मानवता के कल्याण के स्वर

डॉ0 कल्पना माहेश्वरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ए०के०पी० (पी०जी०) कॉलिज, खुर्जा (बुलन्दशहर) उ०प्र०

कवि युग–युगों तक अपने चिन्तन और भावननाओं के द्वारा जीवित रहता है उसकी कृतियों से युगयुगीन साहित्य को प्रेरणा तथा विश्व को नवजीवन के मांगल्य सूत्र मिलते रहते है। जीवन तथा जगत की दिशाओं को देखने के अनन्तर कवि के मनोमस्तिष्क में जो प्रतिक्रिया होती है उसे ही वह अपनी कृतियों में प्रकाशित करता है। कवि जीवन की जितनी अधिक सूक्षमता से देखेगा, जितनी दृढ़ता से पकड़ेगा उसकी कृति जन जीवन के लिये उतनी ही अधिक उदार और शक्तिदायिनी होगी। भावनाओं और विचारों के सीमित क्षेत्र रचनाकार को एक निश्चित सीमा में आबद्ध कर देते है उसकी कृति मात्र वर्ग विशेष की रचनना बनकर रह जाती है परन्तु जीवन को चिरन्तन समस्याओं को लेकर चलने वाले रचनाकार किसी सीमा में नहीं बंधते उनका व्यापक चिन्तन विश्व मानवता की कल्याणमयी सरगम बनकर युग युगों की वीणा पर झंकृत होता रहता है –

मानवता के उपासक प्रसाद जी का सम्पूर्ण साहित्य एक सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित है। उसमें मात्र समाज देश और युग की ही नहीं अपितु मानव जाति की चिरन्तन समस्याओं को उठाकर उनका स्वस्थ समाधान प्रस्तुत किया गया है। मानवता के कल्याण के लिये एक ओर तो वह अतीत से वर्तमान को प्रेरणा देते है और दूसरी ओर वर्तमान से भविष्य के सुधार का उद्देश्य लेकर चलते है। उनके काव्य में उनकी विचारधारा संकेत रूप में अपने उद्देश्य की व्यंजना करती हुयी अप्रतिहत प्रवाहित हो रही है। वह अतीत को साध्य रूप में नहीं अपितु साधन के रूप में अपनाते है। अतीत जीवन का उपयोगी पक्ष की उनके लिये ग्राहय है अनुपयोगी त्याज्य है। उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों का खंडन कर उसके आत्मतत्व को ही सर्वत्र स्वीकारा है, धर्म के सार, सत वस्तु को ग्रहण किया है उनकी धार्मिक भावना विश्व के लिये मानव धर्म का स्वरूप खड़ा करती है।

प्रसाद जी ने मनुष्य और जीवन को एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार किया। व्यक्ति और समाज के मध्य संतुलन का अभाव ही युग युगों की विप्लवकारी क्रांतियों का कारण है– प्रसाद ने विश्व मानवता के विकास में बाधक क्षणिक व्यक्तिगत स्वार्थ की भर्त्सना की है–

अपने में ही सबकुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकान्त स्वार्थ भीषण है अपना ही नाश करेगा।

प्रसाद मानव कल्याण के लिये जो लक्ष्य लेकर चले उनका सार है व्यक्ति का समष्टि में पर्यवसान अर्थात अपने को सम्पूर्ण विश्व में देखना और सम्पूर्ण विश्व को अपने में। उनकी नव मानवता मे समाज और देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। प्रसाद ने व्यक्ति की वैयक्तिक और आध्यत्मिक साधना को समज्जित कर पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्र में निरन्तर कर्म व्यापार द्वारा जन–जीवन के हित का संदेश देकर वैयक्तिक साधना को समाज के लिये कल्याणकारी बनाया। वयक्ति का समष्टि में पर्यवसान् यही ''आंसू में करूणा का व्यापक चिन्तन है – कवि की वैयक्तिक वेदना समष्टि चेदना में ढलकर समस्त प्राणियों के सुख के लिये साधनारत है।

श्यामल अंचल धरणी का भर मुक्ता आंसू कन से
छूछा बादल बन आया मैं प्रेम प्रभात गगन से।।
इस स्वप्नमयी संसृति के सच्चे जीवन तुम जागो।
मंगल किरणों से रंजित मेरे सुन्दरतम जागो।।

जीवन में व्याप्त वैषम्य ही मानवता के स्वस्थ विकास में बाधक है इस विषमता के कारण ही जीवन में एक असंतुलन है। प्रसाद जी विश्व को पूर्ण सत्य मानकर मानवता और समता की घोषणा करते है।

मानव समाज के इतिहास की चिर समस्या व्यक्ति और समाज का असंतुलन है भौतिक प्राणी किस प्रकार अपने क्षणिक व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये सामाजिक हित की बलि कर रहा है कामायनी मे यह क्षणिक विलास की तृप्ति में आतुर मनु के द्वारा व्यंजित हो रहा है। जहां वह प्रकृति–त्रस्त विकम्पित सारस्वत प्रदेश की प्रजा की आर्त पुकार नहीं सुनते, इस बुद्धिवादी युग में लोगों का व्यक्तिगत जीवन किस प्रकार सामाजिक जीवन में विलग होकर नैतिकता के विखंडन का कारण बन रहा है। कामायनी में यह स्पष्ट कर अन्ततोगत्वा नवीन कल्याणमयी मानव सृष्टि के विकास के लिये व्यक्ति और समाज के संतुलित सोपानों को गढ़ा है। वस्तुतः मानव समाज के दुहरे उद्देश्य हैं।

व्यक्तिगत ध्येय की साधना और प्राप्ति के साथ–साथ सामाजिक ध्येय तथा साधना की प्राप्ति। कामायनी में मानवता के विकास में बाधक अन्य चिरन्तन समस्याओं पर भी कवि की गहन दृष्टि रही है– शासक तथा शासित के असंतुलन के परिणाम स्वरूप जो विध्वंस सारस्वत प्रदेश में हुआ वह मानव समाज की शाश्वत समस्या है। मनु के बर्बर शासन द्वारा प्रसाद जी ने आधुनिक शासन विधि की अपरिपक्व, नैतिकता से च्युत बर्बर आसुरी वृत्ति की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार श्रद्धा तथा इड़ा की स्वतन्त्रगति एवं प्रेम द्वारा नारी स्वतंत्रय समस्या की ओर कवि ने संकेत किया है। प्रसाद जी नारी के खोये हुए अधिकार पूर्ण नारीत्व को प्राप्त करने में सतत प्रयत्नशील रहे क्योंकि नारी ही पुरुष को समाज की उन्नति के शिखर पर पहुँचने वाली शक्ति है।

परिवर्तन सृष्टि का आवश्यक नियम है चाह वह प्रकृति में हो अथवा मानव संस्कृति में, परिवर्तन के अभाव में विकास अवरूद्ध हो जाता है, प्रसाद जी युग परिवतर्न के लिये प्रयत्नशील थे परन्तु वह मोहासक्त नहीं थे, न ही नवीनता के लिये पागल कि जीवन के उत्थान पतन का

भी ध्यान नही रखते, उन्होंने साध्य और साधन का अन्तर समझा और अतीत के अनुभव के आधार पर ही भविष्य का विकास क्रम निश्चित किया। उन्होंने अंधी वैज्ञानिकता के उद्भूत आधुनिक युगीन विडम्बनापूर्ण जन जीवन से अनुबंधित सभी छोटी बड़ी समस्याओं का अन्वेषण विश्लेषण कर उनका वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत किया। विज्ञानमयी अधिकार प्रमत्त संस्कृति अंत में संघर्ष विद्रोह और असफलता को जन्म देती है अतः उसे श्रद्धायुत करते हुये उन्होंने मानवीय मूल्यों को प्रश्रय दिया। वह मानव जीवन की सार्वभौमिकता और महत्ता को लेकर चले। उन्होंने अपने काव्य में मुख्यतः कामायनी में ऐसी ही मांगलिक और मानव जीवन से धनिष्ठतम् सम्बन्धित समस्याओं को उठाया जो युग विशेष अथवा देश विशेष तक सीमित न होकर समस्त मानव जाति के चिरकालिक जीवन से अनुप्राणित है, उनमें ऐसे जीवन मूल्यों का अन्वेषण है जो प्रत्येक नवागत पीढ़ी के प्रातव्य और मानवता के अभ्युदय मे सहायक है।

मानव जीवन के सम्य को दृढ़ता से पकड़े हुये प्रसाद का काव्य मानवीय भूमि पर अवस्थित है। मानव धर्म ही श्रेष्ठतम धर्म है वही उसकी भाव–भूमि है जो जीवन यथार्थ से विलग नहीं है। सभी संस्थाओं का उद्देश्य है मानव सेवा। वर्ण, धर्म और देश से परे मानवता स्नेह का सम्बल चाहती है। ''प्रसाद जी का साहित्य सच्चे अर्थो में नवीन जीवन से सम्बद्ध है और यह आधुनिक समस्याओं को प्रतिबिम्बित करता है। वह साम्प्रतिक जीवन का उन्नायक है।''[4]

प्रसाद जी ने जीवन के यथार्थ को पकड़कर उसका आदर्श समाधान प्रस्तुत किया है। उन्होंने वस्तु जगत को विषय बनाकर प्रस्तुत करने में ही यथार्थ की इति श्री नहीं समझी, आदर्श, नीति, मानवीय करूणा और आत्मा के उन्नयन पर उनकी दृष्टि रही। उनकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना उन्हें बहुजन हिताय की प्रेरणा देकर मानवीय आचारों–विचारों व आदर्शो की ओर उन्नुख करती है। वह मानव की बहुमुखी प्रगति के समर्थक है। एकांगी विकास की उन्होंने सर्वथा उपेक्षा की। एकांगी भौतिकवाद कामायनी में संघर्ष की स्थिति लाता है।

प्रसाद जी ने संकुचित अर्थो में जीवन की आर्थिक व्याख्या प्रस्तुत नहीं की और न भौतिक जीवन के सामयिक प्रश्नों का हल हिसांत्मक क्रांति माना वरन् उन्होंने जीवन की भावगत व्याख्या प्रस्तुत करते हुये चिरन्तन मानवीय मूल्यों को परखा है। उनका प्रतिनिधि ग्रन्थ कामायनी देश काल की सीमा से परे संवेदनीय और सर्व युगीन रचना है। उसका धरातल सार्वभौमिक है। जीवन का निर्माण पक्ष ही उसमें सशक्त है– उठती गिरती मानवता निरंतर गतिशील रहकर आनंदमयी विकास की चरमोपलब्धि करे। मानवता की विजय और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा यही प्रसाद काव्य का प्रमुख संदेश है–

शक्ति के विदुतकरण, जो व्यस्त
विकल बिखरे है, हो निरूपाय
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाये।[5]

प्रसाद के लिये निर्माण की भूमि विध्वंस की भूमि से अधिक महत्वपूर्ण है, जीवन का निर्माण पक्ष उनके साहित्य मे सशक्त रूप में उभरा है। मानव मूल्यों को समझकर समस्याओं की

व्यंजना और विचार करने की प्रगतिशील प्रेरणा प्रसाद जी में है। कवि अपने काव्य को मानवीय मूल्यों पर प्रस्तुत करने के प्रयास में सफल हुआ है। व्यक्ति से वह समष्टि पर पहुंचता है।[6] प्रसाद की आकांक्षा इन पंक्तियों में दृष्टव्य है –

मूक हो मतवाली ममता, खिले फूलों से विश्व अनंत
चेतना बने अधीर मिलिद वह आवे विमल बसंत।।[7]

सृष्टि में जो कुछ अभिराम है उसे निरख का संदेश देकर प्रसाद विश्व को अनुराग से रंजित और मानव मन को करूणा से आद्र देखना चाहते है।

अरूण हो सकल विश्व अनुराग,
करूण हो निर्दय मानव चित्त
उठे मधु लहरी मानस में,
वूल पर मलवज का हो वास।।[8]

कवि का यह भाव जगत युग व्यापी जीवन सरणियों पर मानव गरिमा और मानवीय मूल्यों को प्रस्तुत करने में सार्थक सिद्ध हुआ है। प्रसाद की मौलिक करूणा और सर्वभूत हित सिद्धान्त व्यक्तिनिष्ठ धरातल लेकर भी समष्टिगत व्यापकता के लिये है। यह अखिल मानवता को ऐसा जीवन गीत सुनाना चाहते है–जिससे मधुरता और सरसता ही है –

खिंच आये अधर पर वह रेखा
जिसमें अंकित हो मधु लेखा
जिसको यह विश्व करे देखा
वह स्मृति का चित्र बना जा रे।।[9]

वह विश्व में अपने अधरों की मुस्कान द्वारा आनन्दमयी स्नेहिल मानवीय सम्बन्ध प्रतिष्ठित करना चाहते है। छिन्न भिन्न होकर अंधकार पूर्ण जीवन में मानव प्रेम की महत्ता प्रतिष्ठित कर वह युग–युग की नव मानवता को नूतन मांगलिक विकास का संदेश देते है। उनकी साहित्यिक प्रगतिशीलता उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित जीवन के गठन और विकासशील तत्वों में स्पष्ट आंकी जा सकती है। प्रसाद जी विकासशील और उदार सामाजिक प्रवृत्तियों के निरूपक है। ''उनकी साहित्य सृष्टि एक आशावादी और स्वातंत्र्य प्रेम युग की प्रतिनिधि है साहित्यिक उर्थ में उनका साहित्य सर्वथा प्रगतिशील है।''[10]

''प्रसाद जी संदेश देते है वह सम्पूर्ण मानवता के लिये होता है ''कामायनी'' महाकाव्य में उनका मानववाद अपने प्रांजल रूप में आया है। सर्वत्र मानवता के लिये अनेक मंगलमय संदेश मिलते है। महान कवियों की भांति प्रसाद का काव्य जीवन से अनुप्राणित है और जीवन की अभिव्यक्ति ही उसका उद्देश्य है।''[11]

संदर्भ ग्रन्थ

1. कामायनी 'कर्म सर्ग'. पृष्ठ – 123.
2. आँसू. पृष्ठ – 34.

3. आँसू. पृष्ठ – 44.
4. जयशंकर प्रसाद. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी. पृष्ठ – 3.
5. कामायनी 'श्रृद्धा सर्ग'. पृष्ठ – 63.
6. प्रसाद का काव्य. डा. प्रेम शंकर. पृष्ठ – 207.
7. लहर. पृष्ठ – 24.
8. झरना. पृष्ठ – 64.
9. लहर. पृष्ठ – 28.
10. जयशंकर प्रसाद. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी. पृष्ठ – 7. भूमिका।
11. प्रसाद का काव्य. डॉ. प्रेमशंकर. पृष्ठ – 506–507.